बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
बाँदा – २१०००१ (उ0प्र0)
Banda University of Agriculture & Technology, Banda- 210001 (U.P.)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 104/2024) Year: 6th

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 16/04/2024

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	**शाक-भाजी**	➢ कद्दू वर्गीय फसलो, भिंडी, बैगन व टमाटर में नमी संरक्षण हेतु सूखी घास का पलवार प्रयोग करें. ➢ खड़ी फ़सलों में समुचित नमी व खर पतवार प्रबंधन करें. ➢ कीट व रोग प्रबंधन विशेषज्ञों के सलाह के अनुसार करें. ➢ मृदा की जल धारण क्षमता बढ़ाने के लिए फसलो की गुड़ाई के पूर्व कम्पोस्ट का प्रयोग करें.
2-	**शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन**	आज के हालात में खेती तो वैज्ञानिक ढंग से ही करें वरना लाभ की जगह नुकसान मिल सकता है। वैज्ञानिक ढंग आपके सदियों से चले आ रहे तरीकों का सुधरा व लाभदायक रूप है जिससे उतनी ही भूमि में कम समय, मेहनत व लागत से ज्यादा उपज मिलती है। ➢ अप्रैल माह में खेत खाली होने पर मिट्टी के नमूने ले लें। तीन वर्षों में एक बार अपने खेतों की मिट्टी परीक्षण जरूर कराएं ताकि मिट्टी में उपलब्ध पोषक तत्वों)नेत्रजनए फास्फोरसए पोटाशियमए सल्फरए जिंकए लोहाए तांबाए मैंगनीज व अन्य (की मात्रा तथा फसलों में कौन सी खाद कब व कितनी मात्रा में डालनी हैए का पता चले का पता चले। मिट्टी परीक्षण से मिट्टी में खराबी का भी पता चलता है ताकि उन्हें सुधार जा सके। जैसे कि क्षारीयता को जिप्सम सेए लवणीयता को जल निकास से तथा अम्लीयता को चूने से सुधारा जा सकता है। ➢ ट्यूबवैल व नहर के पानी की जांच भी हर मौसम में करवा लें ताकि पानी की गुणवत्ता का सुधार होता रहे व पैदावार ठीक हों। ➢ इस समय कुछ कमजोर खेतों में हरी खाद बनाने के लिए ढ्रैचाए लोबिया या मूग लगा दें तथा धान रोपने से १-२ दिन पहले मिट्टी में जुताई करके मिला दें इससे मिट्टी की सेहत सुधरती है। ➢ ग्रीष्मकालीन फसलों में सिंचाई का समुचित प्रवंधन करें . ➢ रबी की तैयार फसलों की समय से कटाई – मंड़ाई सुनिश्चित करें तथा सुरक्षित स्थान पर भण्डारण करें
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	➢ गर्मियों में शरीर की उष्मा को निकालने व अपने शारीरिक तापमान को स्थिर रखने के लिए पशु शरीर से पानी का पसीने के रूप में वाष्पीकरण करते हैं। पानी को शरीर से वाष्पित होने के लिए पशुओं को शरीर से उष्मा लेनी पड़ती है, जिससे पशुओं के शरीर का तापमान कम हो जाता है। ➢ गर्मियों के मौसम में पशुओं के दुग्ध उत्पादन में गिरावट आ जाती है, जिसका मुख्य कारण चरी की उपलब्धता व गुणवत्ता में कमी व पशुओं का

		गर्मियों में कम चारा खाना है। इसके अतिरिक्त पशु अपनी शारीरिक ऊर्जाको दूध उत्पादन की अपेक्षा अपने शारीरिक तापमान को सामान्य बनाए रखने के लिए उपयोग में लाने को प्राथमिकता देती है। जिससे पशुओं की दुग्ध उत्पादन हेतु पर्याप्त ऊर्जा उपलब्ध नहीं हो पाती व उनके उत्पादन में कमी आ जाती है। ➢ पशुओं के लिए साफ–सुथरी व हवादार आवास की व्यवस्था होनी चाहिए। पशुगृह का फर्श पक्का व फिसलन रहित होना चाहिए तथा मूत्र व पानी के निकास हेतु उपयुक्तव्यवस्था होनी चाहिए। ➢ पशुगृह की छत उष्मा की कुचालक हो, ताकि गर्मियों में अत्यधिक गरम न हो। अगर पशुगृह की छत पक्की या एस्वेस्टस सीट की बनी हो तो उस पर अधिक गर्मी के दिनों में 4 से 6 इंच मोटी घास–फूस की परत डाल देनी चाहिए। ये परत उष्मा अवरोधक का कार्य करती है, जिसके कारण पशुशाला के अंदर का तापमान कम बना रहता है। ➢ सूर्य की रोशनी को परावर्तन करने हेतु पशुगृह की छत पर सफेद रंग करना या चमकीली एल्मोनियम शीट लगाना भी लाभप्रद पाया गया है। ➢ पशुगृह छत की ऊंचाई कम से कम 10 फूट होनी आवश्यक है, ताकि हवा का समुचित संचार पशुगृह में हो सके तथा छत की तपन से पशुओं को बचाया जा सके। ➢ पशुगृह की खिड़किया व दरवाज़ों व अन्य खुली जगहों पर जहा से तेज गरम हवा आती हो, बोरी या टाट आदि टांग कर पानी का छिड़काव कर देना चाहिए। ➢ गर्मियों में ज्यादातर दुधारू पशु सायंकाल 6 बजे से प्रातः 7 बजे की अवधि में मद में आते हैं। खासकर भैंसें रात्रि के 12 बजे से सुबह 5 बजे के मध्य मदावस्था के लक्षण दिखाती है। अकसर पशुपालक इस मदकाल को नहीं पहचान पाते और पशु गर्भित होने से रह जाते हैं। पशु गर्मियों में चारा चरना कम कर देते है अतः पशुओं को चारा प्रातः या सांयकाल में ही उपलब्ध कराना चाहिए। जहा तक संभव हो दुधारू पशुओं के आहार में हरे चारे की मात्रा अधिक रखें। यदि पशुओं को चारागाह में ले जाते हैं तो प्रातः व सांयकाल को ही चराना चाहिए।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ मूँग/उर्द/भिण्डी/लोबिया आदि में पीत शिरा मोजैक/पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के वाहक कीट के नियंत्रण हेतु हेतु पीला चिपचिपा ट्रैप का प्रयोग करें। इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस0एल0 की 0.3 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें। ➢ टमाटर में फल छेदक एवं बैंगन में कलंगी एवं फल बेधक कीट से बचाव हेतु ग्रसित फलों तथा प्रभावित कलंगी को इकट्ठा कर नष्ट कर दें। नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए अथवा क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल कीटनाशी की 100 मिलीलीटर मात्रा को 250 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति एकड़ की दर से 10 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव करना चाहिए।

		➢ कद्दू वर्गीय सब्जियों में फल मक्खी कीट के नियंत्रण हेतु क्षतिग्रस्त फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए। एजाडिरैक्टिन 0.15 प्रतिशत 2.5 लीटर मात्रा को 500–600 लीटर पानी मे घोलकर प्रति हे0 की दर से आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करना चाहिये। मिथाइल यूजीनाल + इथाईल एल्कोहल + मैलाथियान 50 प्रतिशत ई0सी0 के 4:6:1 के बने घोल में 5 X 5 X 1.5 मिमी0 के प्लाईवुड के टुकड़ों को 24 – 48 घंटा तक शोधित कर लगाने से लगभग 500 मी0 तक की फल मक्खी आकर्षित होती है। जिसे एकत्र करके नष्ट किया जा सकता है। ➢ सब्जियों की फसलों में माईट की निगरानी करते रहे व आवश्यकता पड़ने पर घुलनशील गंधक का 3 ग्राम/लीटर अथवा स्पाइरोमेसिफेन 0.8 मिली/ली की दर से छिड़काव करें। ➢ आम में भुनगा कीट व मिली बग की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस0एल0 की 0.3 मिली0 अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 1 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 10–15 दिन के अन्तराल पर 2–3 छिड़काव करें।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ भिण्डी के पीतशिरा (मोजैक) व पत्ती मरोड़ वीषाणु रोग के लक्षण दिखायी देने पर विषाणु वाहक कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड के 17.8 प्रतिशत एस0एल0 का 3 मिली प्रति 10 लीटर पानी में घोलबनाकर 15 दिन अन्तराल पर छिड़काव करें। ➢ मूंग में पीले मोजैक वीषाण ुरोग के लक्षण दिखाई देने पर विषाणु वाहक कीट के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिन के अन्तराल पर आवश्यकता अनुसार छिड़काव करें। ➢ रबी फसल की कटाई के बाद खाली खेतों की गहरी जुताई कर जमीन को खुला छोड़ दें, ताकि सूर्य की तेज धूप से मिट्टी में छिपे कीड़ों के अण्डे, रोग जनक कवक के बीजाणु खरपतवार के बीज इत्यादि नष्ट हो जायें।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	**नींबू:** ➢ नींबू में एक वर्ष के पौधे के लिए दो किग्रा. कम्पोस्ट और 70 ग्राम यूरिया प्रति पौधा दें। अप्रैल में नीबू का सिल्ला, लीफ माइनर और सफेद मक्खी के नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। ➢ तने व फलों का गलना रोग के लिए बोडों मिश्रण का छिड़काव करें। ➢ जस्ते की कमी के लिए तीन किग्रा जिंक सल्फेट को 1.7 किग्रा. बुझा हुआ चून के साथ 500 लीटर में घोलकर छिड़कें। ➢ नींबू प्रजातियो में फल बनने के तुरन्त बाद सिंचाई करनी चाहिए तथा नये पौधों में देषी फुटान अवष्य हटायें ।

बेरः

- छोटे व नये पौधों की सिंचाई करावें पैबन्धी चष्मा हेतु देषी बेर के पौधों की कटाई–छटाई करावें। देषी फुटान हटावें। बागों में सिंचाई रोक देवें।

आमः

- फलों को गिरने से बचाने के लिए यूरिया के दो प्रतिशत घोल से पेड़ पर छिडकाव करें।
- प्रथम पखवाड़े में सिंचाई अवश्य दे। छोटे पौधों के बीच की भूमि की जुताई करें फलों को गिरने से रोकने के लिए मध्य अप्रैल में 2,4–डी, 2 ग्राम प्रति 100 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें।
- आम के गुम्मा रोग (मालफारमेशन) से ग्रस्त पुष्प मंजरियों को काट कर जला या गहरे गढ्ढे में दबा दें. आम के फलों को गिरने से बचाने के लिए एल्फा नेफ्थलीन एसिटिक एसिड 4.5 एस.एल. के 20 मिली को प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें.
- मीलीबग नई कोपलों, फूलों व फलों का रस चूसकर काफी नुकसान करती है। नियंत्रण के लिए इमिडाक्लोप्रिड 0.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें तथा नीचे गिरी या पेड़ों पर चढ़ रह कीड़ों को इकट्ठा करके जला दें और घास साफ रखें।

अमरूदः

- अप्रैल में सिंचाई न करें, फूलों को तोड़ दें ताकि फल मक्खी फूलों में अण्डे न दें पाये, जिससे फल सड़ जाते हैं। अमरूद की सिर्फ शरदकालीन फसल ही लेनी चाहिए।

पपीताः

- अप्रैल मे पपीते की नर्सरी लगाने के लिए 70 वर्ग मीटर में 170 बीज को 6×6 इंच की दूरी और एक इंच गहरा लगाएं। उन्नत किस्मों में सनराइज, हनीड्यु, पूसा डिलीशियस, पूसा ड्र्वाफ व पूसा जांयट हैं। एक नर्सरी में एक कुंतल खाद मिलाकर बेड तैयार करें और बीज को एक ग्राम कैपटोन से उपचारित करें।

7. **वानिकी प्रबंधन**

- गर्म हवा के दुष्प्रभाव से पौध को बचाने के लिए शाम के समय पौधशाला में नियमित सिंचाई करें।
- किसानों को कृषि वानिकी के तहत वृक्षारोपण की योजना तैयार करने की सलाह दी जाती है जैसे उद्देश्य के अनुसार वृक्ष प्रजातियों का चयन, स्थान, रोपण दूरी, गड्ढे तैयार करना इत्यादि।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिए उपयुक्त वृक्षः

इमारतीलकड़ी	सगवान, यूकेलिप्टस, अंजन, नीम, मालाबारनीम, महानिंब, अर्जुन,कैजुरिना
चारावृक्ष	शहतूत, सुबबूल, कचनार, खेजड़ी, अंजन, महानिंब
फलदारवृक्ष	महुआ, जामुन, आँवला, कटहल, बेल, चिरौंजी, कैथा
मौनपुष्प	जामुन,यूकेलिप्टस,अर्जुन,बेल,मोरिंगा,पलाश,कैथा, आम,बेर,कटहल

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

1. डॉ जी. एस. पंवार	6. डॉ मयंक दुबे
2. डॉ दिनेश साह	7. डॉ दिनेश गुप्ता
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	8. डॉ पंकज कुमार ओझा
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	9. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
5. डॉ राकेश पाण्डेय	